मुगल शैली परंपरा के सशक्त हस्ताक्षर : एक सवांद काशी के जीवंत कलाकार अंकित प्रसाद

डॉ राजकुमार पांडेय,
सहायक आचार्य,
ललित कला विभाग,
देव भूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय

काशी या वाराणसी भारतीय संस्कृति और कला का प्राचीन केंद्र है, जिसे विश्व की सबसे पुरानी जीवित नगरी माना जाता है। यहां की सांस्कृतिक धरोहर और कला की विविधता अद्वितीय है। वाराणसी की गलियों में पारंपरिक शिल्प और हस्तकला की अनगिनत विधाएं देखने को मिलती हैं, जैसे कि बुनाई, लकड़ी का काम, और प्रसिद्ध बनारसी साड़ी निर्माण। यहां के कलाकार पीढ़ियों से अपनी कला का संरक्षण कर रहे हैं, और इनकी कला का प्रभाव भारतीय पेंटिंग, मूर्तिकला, और संगीत तक में देखा जा सकता है। काशी संगीत, नृत्य और साहित्य के लिए भी जानी जाती है, और यह शहर भारतीय शास्त्रीय संगीत का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहां का सांस्कृतिक परिवेश सदियों से विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और कलाओं का संगम रहा है, जिससे यह स्थान भारत की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक बन गया है। वाराणसी की सांस्कृतिक समृद्धि भारत की ऐतिहासिक और कलात्मक धरोहर को जीवंत बनाए रखती है।

मुगल शैली की चित्रकला भारतीय कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, और काशी इस

परंपरा का एक जीवंत उदाहरण है। अठारहवीं सदी काशी के इतिहास में चित्र परंपरा के जीवंत साक्ष्य के रूप में आती है। इस काल में भारत के विविध क्षेत्रों से निवासित जीवन व्यतीत करने आए नवाबों, राजाओं–महाराजाओं, शहजादों, मौलवियों, पंडितों, कलाकारों आदि के कारण यह शहर विविध प्रांतीय शैलियों का संगम स्थल बन गया था। इसी समय में मुगल शासक जवां बख्श (शाह आलम द्वितीय का पुत्र) के काशी आगमन के साथ ही यहाँ की चित्रकला परंपरा में मुगल चित्र शैली के रूप में एक और रस घुला। जवां बख्श के साथ ही अनेक कलाकारों का भी यहाँ पदार्पण हुआ था। लालजी मुसव्वर, इन्हीं चित्रकारों में थे, जिन्होंने सर्वप्रथम परवर्ती मुगल चित्र परंपरा को यहाँ स्थापित किया। यहीं से प्रारंभ होता है प्रतिष्ठित मुगल शैली के कलाकारों का वंश वृक्ष। डॉ राधाकृष्णन गणेशन द्वारा लिखित काशी मुगल शैली के वंशज कलाकार से ज्ञात होता है कि यहाँ के स्थानीय चित्रकार सिक्खी ग्वाल थे, जो राजस्थानी शैली के समकक्ष परंपरागत चित्र बनाया करते थे। इन्होंने मुसव्वर से इस विद्या की विधिवत शिक्षा प्राप्त की थी। प्रसिद्ध कलाविद बाबू राय कृष्णदास के अनुसार, ''इस नगरी में कोई न कोई परंपरागत चित्र शैली अवश्य थी, जिसे राजस्थानी शैली के समकक्ष माना जा सकता है।'' इस आधार पर कहा जा सकता है कि सिक्खी ग्वाल द्वारा अपनाई गई स्थानीय शैली निःसंदेह राजस्थानी स्वरूप की रही होगी, जिसे इस नगरी के स्थानीय परिवेश ने वैशिष्ट्य प्रदान किया होगा। मिश्रित मुगल राजस्थानी शैली के अंतर्गत उस्ताद सिक्खी के वंशजों द्वारा बनाए चित्र साक्ष्य हैं, जिनमें

मुगल शैली का कठोर नियंत्रण तथा काशी नगरी की मस्ती, दोनों विद्यमान हैं। सिक्खी के पुत्र बटोही ने दीवालों एवं कागज, दोनों पर चित्र बनाए थे। प्राप्त सूचनानुसार, वाराणसी के बाहर बिहार जाकर भी वहाँ के कई धनिकों एवं राजाओं के भवनों एवं महलों में उन्होंने चित्र बनाए थे और ख्याति अर्जित की थी। पर यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इनके बनाए चित्र आज प्राप्त नहीं हैं। काशी की चित्रकला में मुगल शैली का योगदान न केवल स्थानीय कलाकारों के विकास में महत्वपूर्ण रहा है, बल्कि यह भारतीय कला की समृद्धि और विविधता को भी दर्शाता है। मुगल शैली ने काशी को एक ऐसे केंद्र के रूप में स्थापित किया, जहाँ परंपरा और नवाचार का संगम होता है। यह शहर आज भी उस समृद्ध विरासत का प्रतीक है, जिसे आने वाली पीढ़ियाँ संजोए हुए हैं। काशी का यह कला इतिहास न केवल इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को प्रस्तुत करता है, बल्कि समग्र भारतीय कला के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

काशी की चित्रकला में मुगल परंपरा की धरोहर उस्ताद मूलचंद से अंकित प्रसाद तक शामिल है। काशी की कला परंपरा में उस्ताद मूलचंद का नाम एक मील का पत्थर है। बटोही के पुत्र मूलचंद के समय में इस घराने ने अपनी पृथक पहचान के प्रमाण प्रस्तुत किए। उस्ताद मूलचंद मुगल तकनीक में पारंगत थे, जो उनकी कला में एक अनूठी छाप छोड़ती है। उन्होंने तूलिका, रंग, वाशली, और रंग सभी को स्वयं तैयार किया, जिससे उनकी कला में एक व्यक्तिगत स्पर्श और गुणवत्ता जुड़ गई। काशी परंपरा, जो राजस्थानी कला के समतुल्य मानी जाती है, को मुगल शैली के साथ आत्मसात कर मूलचंद ने एक मिश्रित शैली का विकास किया। इसमें एक ओर मुगल शैली का कठोर नियंत्रण था, वहीं दूसरी ओर काशी की पारंपरिक मौज–मस्ती भी शामिल थी। मूलचंद ने कागज और हाथी दांत दोनों पर चित्र बनाए, जिसमें देवी–देवताओं के साथ–साथ आम लोगों के चित्र भी शामिल थे। देवी–देवताओं के चित्रों के लिए उन्होंने पारंपरिक साधना को ध्यान में रखते हुए पृष्ठभूमि तैयार की और दृश्य रचना के लिए कल्पना का सहारा लिया। उनके द्वारा बनाए गए देवी–देवताओं के कई चित्र काशी के पीताम्बरा देवी मंदिर में सुरक्षित हैं, और भारत कला भवन के संग्रह में उनके द्वारा बनाए गए देवी षोडशी और मातंगी के उत्कृष्ट चित्र भी शामिल हैं। इस परंपरा का विकास उस्ताद राम प्रसाद, उस्ताद शारदा प्रसाद, उस्ताद मुकुंद प्रसाद और डॉ. गोपाल प्रसाद जैसे कलाकारों द्वारा हुआ है। उस्ताद शारदा प्रसाद के दो पुत्रों, गोपाल प्रसाद और मुकुंद प्रसाद, ने इस परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य किया। गोपाल प्रसाद ने चित्रकला की विधिवत शिक्षा प्राप्त की और राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर में अध्यापन कार्य करते हुए परंपरागत तकनीक में मौलिक चित्रों का सृजन किया। वहीं, उनके ज्येष्ठ पुत्र मुकुंद प्रसाद ने अपने पिता के संरक्षण में कार्य करना प्रारंभ किया। पिता के निधन के बाद, उन्हें कलाकार के पूर्ण प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त किया गया। बारह वर्ष की आयु से ही मुकुंद प्रसाद ने पिता से चित्र विद्या सीखना प्रारंभ किया और पारंपरिक मुगल तकनीक में पारंगत हो गए।

मुकुंद प्रसाद ने भारत कला भवन में कार्य करते हुए अनुकृतियाँ बनाने में दक्षता हासिल की, जिसमें मुगल, पहाड़ी, राजस्थानी और आधुनिक शैलियों में विविध चित्रों की सफल अनुकृतियाँ शामिल हैं। उनकी बनाई गई मुगल शैली की 'शाहजहाँ', मिस्कीन द्वारा बनाई 'शेर की सभा', और राजस्थानी शैली का 'अँगड़ाई'

जैसी उत्कृष्ट अनुकृतियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि उन्होंने पारंपरिक तकनीकों को सहेजते हुए आधुनिकता को भी अपनाया है। अनुकृतियों के निर्माण के साथ–साथ, उस्ताद मुकुंद प्रसाद पारंपरिक शैली के चित्रों के निर्माण और तकनीक की शिक्षा भी स्कूली छात्र–छात्राओं को प्रदान करते हैं। स्थानीय स्कूलों के कला के विद्यार्थियों का समूह प्रायः कला भवन भ्रमण करता है और लघु चित्रों का अवलोकन कर प्रशिक्षण प्राप्त करता है। इस प्रशिक्षण में वसली जमाना, कूची तैयार करने की विधि, विविध प्रकार के खनिज और वनस्पतिक रंगों की जानकारी एवं निर्माण प्रक्रिया, चित्रों की अनुकृत्ति करने की विधि, और आकृतियों का सृजन आदि विधाओं का प्रशिक्षण शामिल होता है। उस्ताद मुकुंद प्रसाद अपनी पुत्री कु. वंशश्री और पुत्र अंकित को भी इस विधा में प्रशिक्षण देकर इस अमूल्य धरोहर को संरक्षित करने की दिशा में प्रयासरत हैं। यह परंपरा कई पीढ़ियों से चलती आ रही है, जिसमें उस्ताद राम प्रसाद, उस्ताद शारदा प्रसाद, उस्ताद मुकुंद प्रसाद, डॉ. गोपाल प्रसाद और अब अंकित प्रसाद शामिल हैं। काशी की चित्रकला में मुगल परंपरा का यह जीवंत सिलसिला न केवल कला के प्रति समर्पण को दर्शाता है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत है।

अंकित प्रसाद बनारस घराने की मुगल परंपरा का जीवंत प्रतिनिधि हैं, अंकित प्रसाद बनारस घराने की मुगल चित्रकला की सातवीं पीढ़ी के चित्रकार हैं, और उनके घराने की यह समृद्ध परंपरा लगभग 250 वर्षों से चली आ रही है। अंकित प्रसाद को कला के प्रति गहरी रुचि और समझ प्राप्त करने का वातावरण अपने पूज्य पिता और चाचा के मार्गदर्शन में मिला। इस वातावरण में उन्होंने घर पर ही कला के सूक्ष्म ज्ञान को सहजता से अर्जित किया। उनके पिता और चाचा के चित्रकारी के विधियों, ब्रश के प्रयोग और रंग तैयार करने की प्रक्रियाओं का ज्ञान भी उन्होंने घर पर ही प्राप्त किया। घर की एक दीवार को शिक्षण कार्य के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया था,

जहां रात्रि में चित्रकारी की प्रक्रिया प्रारंभ होती और प्रातःकाल उस पर मिट्टी की लिपाई की जाती, जिससे दीवार अगले दिन चित्रकारी के लिए पुनः तैयार हो जाती। इस प्रकार के नियमित अभ्यास ने अंकित प्रसाद को कला के प्रति गहरी समझ और कौशल प्रदान किया। मुकुंद प्रसाद जी, अंकित के पिता, जब भी कोई चित्र बनाते, तो रंग भरने का कार्य अंकित को सौंप देते या कभी–कभी रंग तैयार करने की जिम्मेदारी भी उन्हें ही दे देते। अंकित ने 5 वर्ष की आयु से ही अपने पिता और चाचा के साथ चित्रकारी शुरू कर दी थी। उनकी समर्पण और कला के प्रति लगन ने उन्हें परंपरागत मुगल तकनीक में पारंगत बना दिया। अंकित प्रसाद मुगल, पहाड़ी, राजस्थानी और आधुनिक शैलियों में चित्रण के विभिन्न प्रयोगों को सफलतापूर्वक अंजाम दे रहे हैं। उनके काम में मौलिकता और परंपरा का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। विशेष रूप से, वे अपने परदादा उस्ताद राम प्रसाद जी से अत्यधिक प्रेरित हैं, जिनके मार्गदर्शन और प्रेरणा ने उन्हें इस कला के प्रति और अधिक समर्पित किया है। अंकित प्रसाद की यह यात्रा न केवल पारंपरिक मुगल कला की धरोहर को जीवित रखती है, बल्कि आधुनिक संदर्भ में भी इसे निखारती है।

आधुनिकता और परंपरा का संगम अंकित प्रसाद की कला की विविधताएँ है। अंकित प्रसाद की कला भारतीय चित्रकला के पारंपरिक और आधुनिक तत्वों का सम्मिलन है, जिसे हम उनके कार्य को चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं। यह विभाजन उनके कलात्मक दृष्टिकोण और शैलियों की विविधता को

उजागर करता है और उनके काम के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करता है। हम उनके कार्य को चार खंडों में वर्गीकृत कर सकते हैं।

पहला है अनुकृति का काम। अंकित प्रसाद ने पुराने उस्तादों और अपने पूर्वजों की कला की नकल करके उनकी परंपरा के सार को पकड़ने की कोशिश की है। उनके मुगल लघु प्रतिलिपि कार्य में, उन्होंने मुगल, पहाड़ी, और राजस्थानी चित्र शैलियों की कई अनुकृतियाँ बनाई हैं। इन कार्यों में न केवल तकनीकी कौशल दिखाई देता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि कैसे अंकित ने इन शैलियों के भीतर गहराई से प्रवेश किया है। उनकी अनुकृतियाँ केवल पुनरुत्पादन नहीं हैं, बल्कि वे एक नए दृष्टिकोण से उन परंपराओं का जश्न मनाने का प्रयास भी हैं। अंकित का यह काम कला के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा को प्रकट करता है और भारतीय कला की धरोहर को सहेजने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

दूसरी श्रेणी में अंकित प्रसाद की नई रचनाएँ, पुरानी चित्रकला का नया रूप है। अंकित प्रसाद ने दूसरी श्रेणी में पुरानी चित्रकला के संदर्भ में अद्वितीय रचनाएँ प्रस्तुत की हैं, जो उनकी व्यक्तिगत जीवन कथा को आत्मसात करती हैं। उनकी कला लघु तकनीक का पालन करते हुए उनके जीवन के अनुभवों को दर्शाती है। अंकित के चित्र केवल भौतिक वास्तविकता तक सीमित नहीं रहतेय वे कभी–कभी अतियथार्थवादी सपनों की दुनिया में भी प्रवेश करते हैं। उदाहरण के लिए, एक चित्र में अंकित ने एक पक्षी की आकृति को दर्शाया है, जो अपने पंजों में एक मानव आकृति को पकड़े हुए है। इस दृश्य में पृष्ठभूमि में फारसी शैली में चित्रित पहाड़ हैं, जो उनके काम में गहराई और सांस्कृतिक धरोहर को जोड़ते हैं। इसके अलावा, उनके खुद के स्कूटर की छवि नीचे बाएँ कोने में दिखाई देती है, जो उनके व्यक्तिगत अनुभवों की पहचान कराती है। इस तरह, अंकित प्रसाद की रचनाएँ उनके व्यक्तित्व और कल्पनाओं का एक अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती हैं, जो उन्हें एक विशिष्ट और व्यक्तिगत कलाकार के रूप में स्थापित करती हैं। उनके काम में कला और जीवन का यह अनूठा समन्वय दर्शकों को गहराई से प्रभावित करता है।

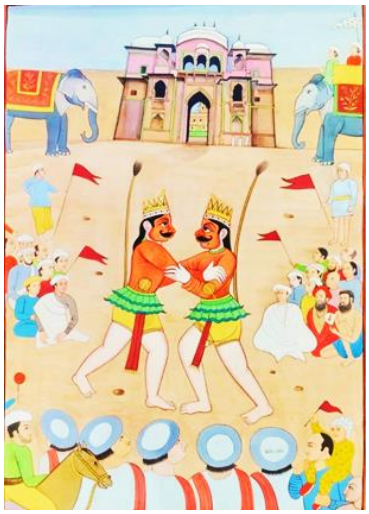

तीसरी श्रेणी की पेंटिंग्स में अंकित प्रसाद की सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक घटनाओं की गहराई से छानबीन करती हैं। इन चित्रों में उन्होंने पारंपरिक मुगल तकनीक का कुशलता से उपयोग करते हुए समकालीन विषयों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। एक प्रमुख चित्र में, अंकित ने स्वयं को वीरासन मुद्रा में चित्रित किया है, जहाँ उनके पास उनके कलात्मक उपकरण और रंग रखे हुए हैं। इस चित्र के ऊपरी दाएँ कोने में उनके परदादा उस्ताद शारदा प्रसाद की पेंटिंग है, जो उनके परिवार की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। चित्र के नीचे रखे वाद्ययंत्र उस्ताद शारदा प्रसाद द्वारा बजाए जाते थे, जो पारंपरिक कला की गहराई को दर्शाते हैं। कोविड महामारी के दौरान, अंकित ने महामारी पर अपनी प्रतिक्रिया भी चित्रित की है। एक चित्र में, वे खुद को

हाथ धोते हुए दिखाते हैं और सैनिटाइजर को तलवार के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो महामारी के खिलाफ एक मजबूत प्रतीक बन गया है। उनकी पेंटिंग्स में पारंपरिक और आधुनिकता का अद्भुत संगम दर्शाता है, जो सामाजिक और ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता को उजागर करता है।

चौथी श्रेणी में अंकित प्रसाद की कला में काशी की सांस्कृतिक विविधता को उजागर करने का एक अनूठा दृष्टिकोण है। वे काशी के उत्सवों, मेले और राम नगर की लीला जैसी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटनाओं को चित्रित करते हैं। अंकित ने अपने चित्रों में नए आयाम जोड़ने का प्रयास किया है, जो दर्शकों को काशी की जीवंतता और उसकी समृद्ध परंपराओं से जोड़ते हैं। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से ललित कला में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद, उन्होंने न केवल पारंपरिक ज्ञान को आत्मसात किया है, बल्कि आधुनिक तकनीकों का भी कुशलता से उपयोग किया है। उनके काम में पारंपरिक मुगल चित्रों की कॉपी वर्क और आधुनिकता का एक अद्भुत संगम देखने को मिलता है। अंकित की कला न केवल ऐतिहासिक संदर्भ को जीवित रखती है, बल्कि उसे वर्तमान समय के संदर्भ में प्रस्तुत भी करती है, जिससे काशी की सांस्कृतिक धरोहर को एक नई पहचान मिलती है। उनकी कलाकृतियाँ दर्शकों को काशी के रंग–बिरंगे जीवन और सांस्कृतिक उत्साह से भरे अनुभव का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान करती हैं।

अंकित प्रसाद, काशी के उभरते कलाकार, अपनी कला को एक नई दिशा देने का संकल्प लिए हुए हैं। उनका लक्ष्य एक स्कूल खोलना है, जहां कला के प्रति उत्साही लोग प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। इस विद्यालय के माध्यम से अंकित न केवल युवा कलाकारों को तकनीकी कौशल सिखाना चाहते हैं, बल्कि उन्हें मुगल कला की समृद्ध परंपरा से भी परिचित कराना चाहते हैं। अंकित का मानना है कि इस कला के अध्ययन से न केवल कलात्मक विकास होगा, बल्कि यह युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से भी जोड़ने में मदद करेगा। अंकित कला के डिजिटल रूपांतरण में भी रुचि रखते हैं। वे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और कार्यशालाओं का उपयोग करके मुगल कला को नए संदर्भ में पेश करने का प्रयास कर रहे हैं। उनके अनुसार, डिजिटल माध्यम से कला की पहुंच बढ़ाने से अधिक लोग इस कलात्मक रूप को समझ और सराह सकेंगे। अंकित का यह प्रयास न केवल उन्हें एक सफल कलाकार बनाएगा, बल्कि कला के प्रति समाज की जागरूकता बढ़ाने में भी सहायक होगा। उनकी दृष्टि और लगन निश्चित रूप से काशी की कला परंपरा में नया उजाला लाएगी। इस प्रकार अंकित प्रसाद की कला की विविधताएँ उनकी पारंपरिक विद्या और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन स्थापित करती हैं, जो उन्हें एक विशिष्ट और प्रभावशाली कलाकार बनाती हैं।

स्रोत–

- कलाकार अंकित प्रसाद से साक्षात्कार
- कला इतिहासकार राधा कृष्ण गणेशन से साक्षात्कार
- छवि चित्र–कलाकार अंकित प्रसाद द्वारा स्वनिर्मित